परमात्म वरदानों से होली

ब्रह्माकुमारी राजकुमारी, मजलिस पार्क (दिल्ली)

परमात्म वरदान वर्ष है यह, भर लो वरदानों से झोली
आओ पहनें रूहे हर्ष इस वर्ष, अरे पिछली तो हो-ली सो होली

इक वरदान पावनता का, चमके भाल पे आत्मस्मृति की रोली
क्यूँ ढूँढ़े इत-उत? सुख-शान्ति तो खुद ब खुद संग होगी
रंग सत्य ज्ञानामृत के लगेंगे बरसने बरसाने,
शिव बाप खुद आप लगे खिलाने, दिलखुश टोली
है उठने वाली जहां से भय-आतंक-भ्रष्टाचार की डोली
मैं आत्मा, तू आत्मा भ्रातृत्व में करें रमण, बनें हमजोली,
परमात्म वरदान .....

आएँ तूफाँ कितने भी, तू फाँ न होना, पकड़े रख याद की डोरी
हम रूहे गुलाब, उड़ाएँ गुलाल, न हों भ्रमित, रहें सदा हरित
भस्माएँ विकर्म, झूलें अतीन्द्रिय सुख, पवित्रता की चुनरी ओढ़ी
भरमाए न कोई साधन, मैं तो लवलीन साधना में हो ली
परमात्म वरदान .....

चले न इसमें माया की कोई बरज़ोरी, न रहे मेरी कोई कमज़ोरी
प्रीत शिव बाप संग जोड़ी, समझ ले आत्मा मोरी
आओ मिलाएँ संस्कार, करें मिलाप, हो आंतरिक रास
गोपी हर आत्मा, गोपी वल्लभ के संग हो ली
परमात्म वरदान .....

कर सकेंगे क्या बाहर के युद्ध, जब अन्तर्युद्ध से मुक्त मैं हो ली
हुआ आध्यात्मिकीकरण, देहाभिमान ले शरण, बने हंसों की टोली
छँटेंगे बादल काले, झाँके स्वर्णिम भोर, आत्मविभोर हो ली
संजोयी शुद्ध सोच, शुद्ध कर्मों की, लगा दी जीवन की बोली
परमात्म वरदान .....